आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक: -प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 9 • अंक-2536 • उदयपुर, शनिवार 04 दिसम्बर, 2021 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

हादसों में हाथ-पैर गंवाये : अब चल पड़े

दुर्घटनाओं में अंग (हाथ–पैर) खोने वाले भाई–बहनों को अक्टूबर में विभिन्न शहरों में निःशुल्क शिविर आयोजित कर कृत्रिम अंग लगाए गए। इससे पूर्व आयोजित शिविरों में कृत्रिम अंग बनाने के लिए प्रोस्थेटिक इंजीनियर द्वारा मैजरमेंट लिया गया। इन शिविरों में जांच कर ऑपरेशन योग्य दिव्यांगों का चयन भी किया गया।

गुरुग्राम– मित्सुबिसी इलेक्ट्रिक प्राइवेट लिमिटेड के सहयोग से गुरुग्राम (हरियाणा) के सेक्टर–14 स्थित सामुदायिक केन्द्र में एक विशाल दिव्यांग जांच, चयन, कृत्रिम अंग माप एवं सहायक उपकरण वितरण शिविर आयोजित किया गया। शिविर में 86 दिव्यांगजन ने पंजीयन करवाया। जिनमें से टेक्नीशियन श्री उत्तम चंद ने हादसों में हाथ–पैर गंवाने वाले 13 लोगों के कृत्रिम अंग बनाने के लिए नाप लिया। 10 दिव्यांगों के लिए उनके हाथ–पांव की स्थिति के अनुसार कैलीपर बनाकर लगाए गए। 30 दिव्यांगों को ट्राईसाइकिल, 10 को व्हीलचेयर और 5 दिव्यांगों को बैसाखी की जोड़ी प्रदान की गई। 3 दिव्यांगों का निःशुल्क ऑपरेशन के लिए चयन किया गया। शिविर के मुख्य अतिथि मित्सुबिसी इलेक्ट्रिक प्राइवेट लिमिटेड के प्रबन्धक श्री सुकान्त कुमार थे।

अध्यक्षता कम्पनी के ही श्री विजय प्रताप ने की। विशिष्ट अतिथि समाजसेवी श्री विनोद गुप्ता, श्रीमती कृष्णा अग्रवाल, श्रीमती रूमा विरल व श्रीमती शंकुतला थी। गुरुग्राम आश्रम प्रभारी श्री भंवर सिंह राठौड़ व दिल्ली आश्रम प्रभारी श्री जतन सिंह भाटी ने अतिथियों का स्वागत सम्मान किया। शिविर प्रभारी हरिप्रसाद लढ्ढ़ा ने संचालन किया।

सीकर – समदृष्टि, क्षमता विकास तथा अनुसंधान मंडल के सौजन्य से संस्थान के तत्वावधान में श्री मदनलाल भीकमचंद बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय, सीकर (राजस्थान) में आयोजित दिव्यांग जांच, चयन एवं कृत्रिम अंग माप शिविर में 106 दिव्यांगों का पंजीयन हुआ।

जिनमें से 16 का चयन निःशुल्क सर्जरी के लिए किया गया जबकि 11 दिव्यांगों के कृत्रिम अंग तथा 28 के कैलिपर बनाने के लिए टेक्नीशियन श्री उत्तम चंद द्वारा नाप लिया गया। शिविर के मुख्य अतिथि क्षेत्रीय सांसद श्री सुबोधानंद महाराज थे। अध्यक्षता समदृष्टि, क्षमता विकास तथा अनुसंधान मंडल के प्रांतीय अध्यक्ष श्री रतन लाल शर्मा ने की। विशिष्ट अतिथि पूर्व सरपंच श्रीमती प्रतिभा देवी, एडीजे श्रीमती सीमा सारंग, समाजसेवी श्री महेन्द्र मिश्रा, श्री राधाकृष्ण व विद्यालय प्राचार्य श्री राकेश पारीक थे। शिविर प्रभारी श्री मुकेश शर्मा व श्री भरत भट्ट ने अतिथियों का स्वागत–सम्मान किया।

बीदर– संस्थान के तत्वावधान एवं केन्द्रीय रसायन एवं उर्वरक राज्यमंत्री श्री भगवत जी खुंबा के सहयोग से बीदर (कर्नाटक) में सम्पन्न मेगा दिव्यांग जांच, चयन, कृत्रिम अंग माप एवं सहायक उपकरण वितरण शिविर में 225 दिव्यांगजन पंजीकृत हुए। जिनमें से 25 के लिए कृत्रिम अंग (हाथ–पैर) व 12 के लिए कैलिपर बनाने का नाप टेक्नीशियन श्री नाथू सिंह ने लिया। डॉ. अजमुद्दीन ने 8 दिव्यांगों का निःशुल्क ऑपरेशन के लिए चयन किया। मुख्य अतिथि एवं शिविर सहयोगकर्ता श्री खुंबा एवं विशिष्ट अतिथियों ने 15 दिव्यांगों को ट्राईसाइकिल, 5 को व्हीलचेयर तथा 25 दिव्यांगों को बैसाखी की जोडियां वितरित की। विशिष्ट अतिथि समाजसेवी सर्वश्री राजकुमार अग्रवाल, बृजकिशोर, आर.जी. अग्रवाल, सत्यभूषण जैन व समन्वयक श्री नागराज कपूर थे। श्री पन्नालाल हिरालाल कॉलेज में सम्पन्न शिविर का संचालन श्री हरिप्रसाद लढ्ढ़ा ने एवं व्यवस्था में श्री प्रकाश डामोर व श्री महेन्द्र सिंह रावत ने सहयोग किया।

मालपुरा– संस्थान के तत्वावधान में श्री बारादरी रामचरित मानस मंडल के सौजन्य से मालपुरा (टोंक–राजस्थान) में कृत्रिम अंग वितरण शिविर सम्पन्न हुआ। मुख्य अतिथि अग्रवाल समाज, चौरासी, महिला प्रदेश अध्यक्ष श्रीमती इंदु मित्तल थी। अध्यक्षता भाजपा मालपुरा मंडल के अध्यक्ष श्री त्रिलोक जैन ने की।

शाखा संयोजक श्री सुरेन्द्र मोहन जैन ने बताया कि टेक्नीशियन श्री प्रकाश मेघवाल व श्री नाथू सिंह ने शिविर में 17 दिव्यांगों को कृत्रिम अंग तथा 16 को कैलिपर लगाए। विशिष्ट अतिथि महिला अग्रवाल समाज की ब्लॉक अध्यक्ष श्रीमती गुंजन मित्तल व समाजसेवी श्री विकास जैन थे। संचालन हरिप्रसाद लढ्ढा ने किया।

मुम्बई– सहयोग सेवा ग्रुप, मुम्बई के सहयोग से मुम्बई के बोरीवली–वेस्ट स्थित राजस्थान भवन में संस्थान की स्थानीय शाखा के तत्वावधान में कृत्रिम अंग वितरण शिविर आयोजित किया गया। जिसमें करीब 100 से अधिक दिव्यांगों ने पंजीयन करवाया। टेक्नीशियन श्री नाथू सिंह व श्री प्रकाश मेघवाल ने 33 दिव्यांगों को कृत्रिम अंग जबकि 49 को कैलिपर लगाए। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि उत्तर पूर्वी–बोरीवली के सांसद श्री गोपाल शेट्टी थे। अध्यक्षता क्षेत्रीय विधायक श्री सुनील राणे ने की। विशिष्ट अतिथि नगर सेवक श्री प्रवीण शाह, ब्राइट ग्रुप के मैनेजिंग डायरेक्टर डॉ. योगेश लखानी, सहयोग सेवा ग्रुप के श्री यतीन जी मागिया व श्री संजय सेमलानी थे। संस्थान शाखा के संयोजक श्री कमलचंद्र लोढ़ा ने अतिथियों का स्वागत–सम्मान किया। शिविर प्रभारी हरिप्रसाद लढ्ढा व मुम्बई आश्रम के श्री महेन्द्र जाटव थे।

खुशी की तलाश

जीवन की खुशी इसमें नहीं है कि आप कितने खुश हैं, बल्कि इसमें है कि आपके कारण कितने लोग खुश हैं। एक धनाढ्य महिला प्रायः उदास रहती थी, लेकिन उसकी समझ में यह नहीं आ रहा था कि ऐसा क्यों है? वह खुशी की तलाश में किसी मनोविज्ञानी के पास गई। वह बोली, 'मुझे हर समय खालीपन का एहसास होता है जीने का मकसद समझ में नहीं आता।' मनोचिकित्सक ने पास ही कमरे की सफाई कर रही एक महिला को अपने पास बुलाया।

चिकित्सक ने अमीर महिला से कहा, 'अब यह देवी आपको बताएंगी कि उन्हें अपनी खुशी कैसे मिली? मैं चाहता हूं कि आप उन्हें सुनें।' देवी ने झाड़ू नीचे रखी और डॉक्टर के कहने पर पास वाली कुर्सी पर बैठ गई। उसने कहा, 'मेरे पति की मृत्यु मलेरिया से हुई थी। तीन माह बाद मेरा इकलौता बेटा भी कार दुर्घटना में चल बसा। मेरे लिए अब कुछ नहीं बचा था। ना मैं सो पाती थी, ना भूख लगती थी, मुस्कुराहट तो कभी चेहरे पर आई ही नहीं। मरने के विचार आते थे। फिर एक दिन बिल्ली का एक छोटा–सा बच्चा मेरे साथ घर तक आया। उसकी हालत देखकर मुझे दुःख हुआ। बाहर ठंड थी, तो मैं उसे अंदर ले आई। उसे दूध दिया। दूध पीने के बाद वह मेरे पास बैठ गया और सूनी आंखों से मुझे ताकने लगा। मैंने दुलार से उसके पीठ पर हाथ फेरा। बच्चा अब मेरी गोद में आकर मेरे हाथ को चाटने लगा।

उसकी इस हरकत पर मुझे हंसी आ गई। यह लम्बे समय बाद चेहरे पर आई मुस्कान थी। मुझे लगा कि बिल्ली के बच्चे की मदद करके जब मेरे चेहरे पर मुस्कान आ गई है, अगर इसी तरह मैं और दुःखी लोगों के आंखों के भी आंसू पौंछ सकूं तो कितनी खुशी मिलेगी। अगले दिन मैंने घर में ही बिस्किट बनाएं और पड़ोसी बीमार के यहां जाकर उसका हाल– चाल पूछते हुए उसे दे दिए। वह बहुत प्रसन्न हुआ और मेरे प्रति कृतज्ञता जता रहा था। ऐसा करना मेरा रोज का कम बन गया।

अब मुझे लगता है कि मैं दुनिया की सबसे सुखी इंसान हूँ। चैन से खाती हूँ, ढ़ग से सोती हूँ और हर समय खुश रहती हूँ। मैंने यह जान लिया कि दूसरों को खुशी देने में ही खुशी मिलती है।

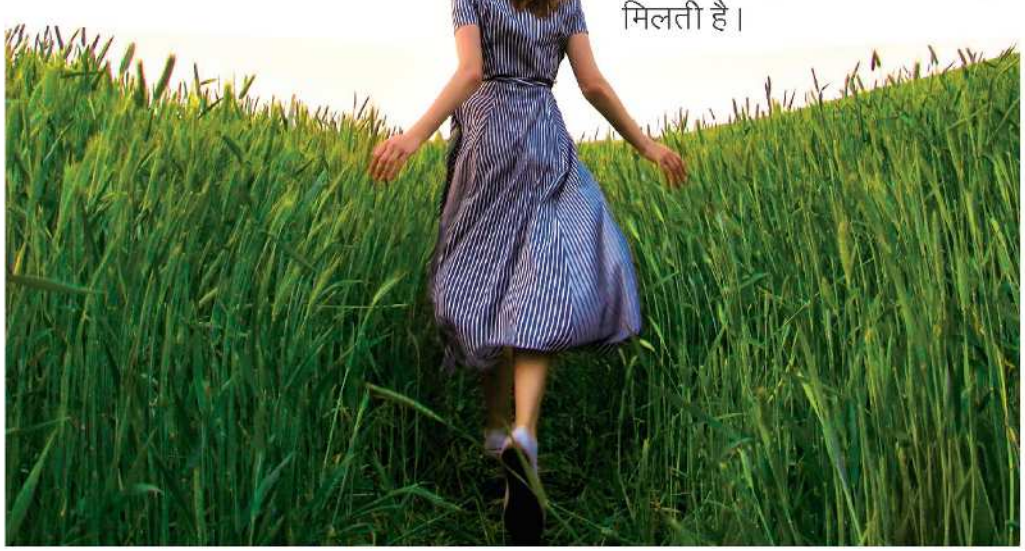

प्रसन्नता प्रेम का झरना : कैलाश मानव

रामचरित मानस में गोस्वामी तुलसीदास जी ने वंदना की कविश्वरों, कपिश्वरों कविश्वर वाल्मीकि जी महाराज की। जिन्होंने एक पक्षी को देखा एक दिन बैठे हुए थे कोई चिंतन कर रहे थे अचानक एक पक्षी दम्पती एक क्रोंच नाम का मादा और क्रोंच नाम का नर और एक तीर आकर क्रोंच नर के लग गई और उसके प्राणों का अंत हो गया और उसी क्षण उसकी पत्नी मादा को उसने अपने प्राण छोड़ दिये। और दोनों के प्राण चले गये और कवीश्वर हमारे वाल्मीकि जी ऋषि जी महाराज आर्त्तनाद कर उठे और पहला श्लोक बन गया वाल्मीकि रामायण का। पहला श्लोक बन गया। करुणा का श्लोक, ये दया का श्लोक, ये अतिथि के स्वागत का श्लोक, ये बच्चों को संस्कारित करने का श्लोक और श्लोक क्या करवायेंगे बाबू? घणा आपणे आवे बढ़िया बात है। आना ही चाहिए भगवान ने अपन को बुद्धि दी है। यों खोपड़ा लेकिन करोड़ो बातें आप इसके विज्ञान में संग्रहित कर सकते हैं। आज मैं एक बात आपको विशेष कह रहा हूँ। अपनी संज्ञा को प्रज्ञामयी बना लें। कैसे अरे बाबूजी ? मोटे–मोटे शब्द बोल दे संज्ञा कई वे मने मालूम नहीं ? संज्ञा का मतलब पहचानने की शक्ति ये रोहित जी आये है नमो नारायण रोहित जी की वाणी है। ये मेरी संज्ञा ने पहचान लिया। अब रोहित जी के आगे महिम जी मैंने पहचान लिया रोहित जी इसका मतलब मेरी प्रज्ञा सत्य नहीं हुई। मेरी संज्ञा सत्य नहीं हुई मैंने महिम जी की बजाय रोहित जी को पहचान लिया। रोहित के बजाय महिम को पहचान लिया तो मेरी संज्ञा सत्य हो जाये मैं सही पहचान कर सकता हूँ। सबसे बड़ी पहचान ये है हमारा शरीर जा रहा है। लगी हाथ में घड़ी रही बाबूजी गिर पड़े मर गये। उधर कटा वारन्ट मौत का कल की पेशी पड़ी रही। वकील साहब चले गये। कलम कॉन में टंगी रही सेठ साहब के हिसाब–किताब की बहियां वहीं पड़ी रह गयी। हा– हा कितना बया करुं में इस दुनियाँ की अजब गति। चन्दन आना है और जाना है फर्क नहीं राय रति। नेक कमाई की है जिसने, बस उसकी नेक कमाई क्या होती है।

सम्पादकीय

समरसता एक मानसिक भावदशा है। इस भाव के उदय होने पर हरेक व्यक्ति, अपनों सा लगने लगता है। दो या अनेक व्यक्ति विलय न होकर आत्मीय संबंधों से जुड़ जाये, शायद यही समरसता है। समरस होने पर एक दूसरे का सुख–दुःख परस्पर अनुभव होने लगता है। खुशी व गम बाँटने का भाव प्रबल होता है। इसलिये समरसता की सोच स्तुत्य मानी गई है। यों तो समरसता के प्रादुर्भाव के अनेक उपाय होंगे किन्तु सेवा भी समरसता का अनुभूत प्रयोग हैं। हम जब किसी की सेवा के लिये उद्यत होते हैं तो सेवित के प्रति हमारा स्वकीय भाव उमड़ता है। यह स्व की अवधारणा ही समरसता के बीजा का अंकुरण है। जब स्व का भाव आ जाता है तो फिर सेवा क्रिया न रहकर कर्तव्य में परिवर्तित होने लगती है। अब तक के सेवा के इतिहास में कर्तव्य–भाव की सेवा को श्रेष्ठ कहा गया है क्योंकि इससे अहं की सेवा को श्रेष्ठ कहा गया है क्योंकि इससे अहं का भाव जन्म नहीं हो सकता। सेवा द्वारा भी सूक्ष्म अभिमान आ सकता है यदि सेवक न सेवित के मध्य आत्मीय भाव एवं समरसता का समावेश न हो। अतः सच्ची सेवा के अनेक फलों में एक प्रमुख फल समरसता भी है। यह मानवीय भी है और अनुकरणीय भी।

कुछ काव्यमय

सेवा समरसता की जननी,
सेवा 'स्व' का है विस्तार।
सेवा से सेवक सेवित में,
भावों का उपजे संसार।
सेवा बीज, अपनापन अंकुर,
समरसता तरु हो तैयार।
समरस समाज ही दे पाता,
परमानंद ही परम बयार।।

- वरदीचन्द राव

इन्हीं दिनों अमेरिका के नार्थ कैरोलीना प्रान्त की एक दम्पती का अस्पताल में आना शुरु हुआ। इनके नाम मनु भाई व जया बेन थे। दोनों शिविरों में भी निरन्तर भाग लेते थे। वे कैलाश के कार्यों से अत्यन्त प्रभावित हो गये। जया बेन का तो कैलाश के प्रति इतना स्नेह उमड़ा कि वे एक दिन उसे कह पड़ी –आप मेरे भाई जैसे हो। कैलाश यह सुन गद्‌गद् हो उठा, उसने कहा –अपनी बात से यह "जैसे" का तमगा हटा दो, मैं भाई जैसा नहीं वरन भाई ही हूं।

जया बेन ने कैलाश को अमेरिका आने का निमन्त्रण दिया। कैलाश को भी मन की इच्छा थी कि अमेरिका का इतना नाम है, एक बार तो वहां जाना ही चाहिये, उसने जया बेन का प्रस्ताव तुरंत स्वीकार कर लिया मगर एक शर्त डाल दी। उसने कहा वह अमेरिका आने को तैयार है मगर इस शर्त पर कि वह एक महीना उसके साथ रहे और धन संग्रह में मदद करें। जया बेन इसके लिये राजी हो गई, उसने कहा–धन संग्रह के लिये न्यूयार्क ज्यादा उचित रहेगा। कनेक्टिकट में जया बेन की बहन रहती थी, हालांकि यह अलग राज्य है मगर है न्यूयार्क का ही हिस्सा। हमारे यहां जिस तरह नोयडा उत्तरप्रदेश में होते हुए भी दिल्ली का हिस्सा है ठीक उसी तरह।

कैलाश ने अमेरिका यात्रा हेतु डॉ. अग्रवाल को तैयार किया। वे अत्यन्त सरल व्यक्ति थे, कैलाश की बात आसानी से मान गये, उनके कई शिष्य न्यूयार्क तथा अमेरिका के विभिन्न भागों में नामी गिरामी डॉक्टर थे। वीजा वगैरह की औपचारिकताएं पूरी हो गई तो मनु भाई से सलाह कर तिथियां तय कर ली गई और टिकिट खरीद लिये।

अंश - 174

अपनों से अपनी बात

रिश्ते निभायें

जिस प्रकार एक बछड़ा हजारों गायों के बीच में अपनी माँ को पहचान लेता है, उसी प्रकार किए गए कर्म भी कर्त्ता का अनुसरण करते हैं। जब भगवान दुःख देता है तो उसे सहन करने की शक्ति भी देता है। भगवान से ये न कहें कि मुझे दुःख– दर्द मत देना। भगवान से यही प्रार्थना करना कि मैंने जो कर्म किए हैं, उसके लिए जो भी दुःख–तकलीफें लिखी हैं, उन्हें जरूर देना, लेकिन उन सब पीड़ाओं को सहन करने की शक्ति भी जरूर प्रदान करना। भीष्म पितामह जब बाणों की शैय्या पर सोए हुए थे, पूरे बदन में तीर घुसे थे, तो उन्होंने श्रीकृष्ण से पूछा –हे श्रीकृष्ण! मैंने ऐसा कौन–सा अपराध किया है, जिसकी वजह से मेरी स्थिति इतनी दुःखद हो गई है। मेरे शरीर के हर अंग में तीर घुसे हुए हैं, रक्त बह रहा है और मुझे असहनीय वेदना भोगनी पड़ रही है। हे वासुदेव ! मैंने अपने पिछले 100 जन्म देख लिये हैं, मैंने 100 जन्मों में ऐसा कोई गलत कार्य नहीं किया है

कि मुझे ऐसी सजा मिले। श्रीकृष्ण ने कहा– पितामह ! आप अपने 101वें जन्म में जाइए और देखिए। भीष्म पितामह आँखें बंद करते हैं और 101वें जन्म में जाते हैं। वह देखते है कि वे एक देश के राजा हैं और अपने सेनापति और सैनिकों के साथ जंगल में भ्रमण कर रहे हैं। भ्रमण करते–करते एक साँप उनके रास्ते में आ जाता है। सेनापति कहता है कि महाराज ! रास्ते के बीच में साँप मिला हैं। वह सेनापति को आदेश देते हैं कि इस साँप को हमारे पथ से हटा दिया जाए। सेनापति एक तीर से उस साँप को उठा कर झाड़ियों में फेंक देता है। वह साँप कंटीली झाड़ियों में फंस जाता है। उस साँप के शरीर में काँटे घुस जाते हैं और वह साँप तड़प–तड़प कर मृत्यु को प्राप्त होता है। जब ये दृश्य भीष्म पितामह अपने 101वें जन्म में देखते हैं तो कहते हैं कि जो कर्म मैंने किया था, आज मैं उसकी सजा पा रहा हूँ, उसी कर्म को भोग रहा हूँ। हमें हमारे सभी जन्मों के कर्म भोगने पड़ेंगे। अतः हम आज कोई ऐसा कृत्य न करें, जिसका दुष्परिणाम हमें कल भोगना पड़े। भगवान ने किसी का भाग्य नहीं लिखा है। कर्मों ने आपका भाग्य लिखा है। जो कृत्य हम आज कर रहे हैं उसका फल आज नहीं तो कल हमें अवश्य भोगना ही पड़ेगा। अगर आज हमने किसी की सेवा की है तो आने वाले समय में हमारी सेवा में भी कोई जरूर तत्पर होगा। हमेशा कर्म ऐसा करें कि आने वाला कल अच्छा संदेश लेकर आए। वर्तमान को इतना श्रेष्ठ कर लो कि भविष्य में कोई तकलीफ ही न आए। जो भी तकलीफ हमारे जीवन मे आती है, उसके जिम्मेदार हम स्वयं हैं। उसके लिए हम किसी और को दोष न दें।

–कैलाश 'मानव'

कर्मफल

भाइयों और बहनों कथा इसलिए करते है, प्रातःकाल भोर के समय जब जगते है जल्दी उठना चाहिए 4 से 5 के बीच तो उठ ही जाना चाहिए। बेला अमृत गया, आलसी सो रहा, बन अभागा।

साथी सारे जगे,
तूं ना जागा।।
हर आँख यहाँ
यूं तो बहुत रोती है।
हर बूंद मगर अश्क
नहीं होती है।।
पर देखकर रो दे,
जो जमाने का गम,
उस आँख से आँसू,
गिरे वो मोती है।।

अपने मोतियों को टपकने दीजिए। अपने धन का 10 वां अंश सेवा में लगाते रहिए। सुमन्त्र जी जब लौटे तो घोड़े भी व्याकुल थे। रामचरित मानस में कहा गया गोस्वामी महाराज ने और बाल्मीकी रामायण में बाल्मीकी ऋषि ने कहा संस्कृत के श्लोकों में कहाँ घोड़े कभी हिन–हिनाते हैं। कभी पीछे की तरफ देखते हैं। सुमन्त्र जी को बहुत मुश्किल हो रही है– रथ

चलाने में। घोडे बार–बार चाहते है मैं पीछे लौट जाऊं। मैं राम जी के पास चला जाऊं। लाला दशरथ जी के प्राण तो है लेकिन प्राण जैसे अभी छूटना चाहते हैं। दशरथ जी बार–बार देख रहे राम आये, वो आये, अब आने वाले हैं। राम लौटकर के आ जायेंगे। सुमन्त्र जी मैंने कहा तो लेकर के आ जायेंगे। लक्ष्मण भी आयेंगे। सीते भी आयेगी। जब सुमन्त्र को पूछा के राम कहाँ गये? कहाँ लक्ष्मण? कहाँ है सीते है? सुमन्त्र मैंने तुम्हें कहकर भेजा था। उनको लौटा कर ले आना।

कौशल्या रोने लगती, सुमित्रा रोने लगती और श्रवण कुमार की कथा याद आ गयी। दशरथ जी ने कहा कौशल्या जी मैं जब युवा अवस्था में था। प्रजा ने कहा था इस जंगल में कुछ पशु हिंसा करते हैं। मैं पशुओं का वध करने के लिए निकला।

तालाब के पास से किसी पशु के पानी पीने की आवाज आयी। मैंनें सोचा शेर पानी पी रहा है। मैंने इशारे से संकेत से एक बाण मारा।

अहा राम–राम मेरे प्राण ले लिए आवाज आयी किसी मनुष्य की। मैं व्याकुल होकर के दौड़ा। वहाँ देखा एक 30 साल का नवयुवक की छाती में मेरा बाण लग गया है। बोले राजन आपने अच्छा नहीं किया।

दशरथ मेरे पिताजी की आँखे नहीं है। मेरी माताजी भी बहुत वृद्ध है उनकी इच्छा की पूर्ति के लिए मैं उनको तीर्थ करवा रहा था। पालकी में बिठाकर के अपने कन्धों पर तीर्थ यात्रा करवा रहा था। आधे घंटे पहले उनको प्यास लगी थी। बेटा तर लगी है।

मैं पानी भरने आया था आपने मुझे मार डाला–दशरथ।

हो बेटा श्रवण पाणिड़ो पिलाय....।
....वन में बेटा प्यास लगी।।

आपने अच्छा नहीं किया। अब आप ये जल ले जाओ। मैं तो अनन्त काल की यात्रा करने बढ़ रहा हूँ। आपके इस तीर ने मेरे प्राण हर लिए। मैं एक मिनट से ज्यादा जिंदा नहीं रहूंगा। आप मेरे पिताजी–माताजी की प्यास बुझा देना। दशरथ जी की आँखों में आंसू आ गये।

कौशल्ये बहुत रोया लेकिन क्या कर सकता था? जल लेकर के गया। पिताजी जल पी लीजिए। मेरे श्रवण की आवाज नहीं है। मैंने जब कहा मैं अभागा दशरथ। बाबू बन्धु, भाइयों–बहनों ये कथा हमारी व्यथा मिटे। हम कर्त्तव्य निभाने लग जावें, हमें इस दुनिया में रहना आ जावे। हम धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को समझ जावें।

– सेवक प्रशान्त भैया

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित–झीनी–झीनी रोशनी से)

जीभ स्वाद का पता कैसे लगाती है

हमारे पास वस्तुओं के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए पांच ज्ञानेंद्रियां है– आंख, नाक, कान, त्वचा और जीभ। इनमें से जीभ हमें स्वाद का ज्ञान कराती है।

जीभ मुँह के भीतर स्थित है। यह पीछे की ओर चौड़ी और आगे की ओर पतली होती है। यह मांसपेशियों की बनी होती है। इसका रंग लाल होता है। इसकी ऊपरी सतह को देखने पर हमें कुछ दानेदार उभार दिखाई देते हैं, जिन्हें स्वाद कलिकाएं कहते हैं। ये स्वाद कलिकाएं कोशिकाओं से बनी है। इनके ऊपरी सिरे से बाल के समान तंतु निकले होते हैं। ये स्वाद कलिकाएं चार प्रकार की होती है, जिनके द्वारा हमें चार प्रकार की मुख्य स्वादों का पता चलता है। मीठा, कड़वा, खट्टा और नमकीन। जीभ का आगे का भाग मीठे और नमकीन स्वाद का अनुभव कराता है। पीछे का भाग कड़वे स्वाद का और किनारे का भाग खट्टे स्वाद का अनुभव कराता है। जीभ का मध्य भाग किसी भी प्रकार के स्वाद का अनुभव नहीं कराता, क्योंकि इस स्थान पर स्वाद कलिकाएं प्रायः नहीं होती है। स्वाद का पता लगाने के लिए भोजन का कुछ अंश
लार में घुल जाता है और स्वाद–कलिकाओं को सक्रिय कर देता है। खाद्य पदार्थों द्वारा भी एक रासायनिक क्रिया होती है, जिससे तंत्रिका आवेग पैदा हो जाते हैं। ये आवेग मस्तिष्क के स्वाद केंद्र तक पहुँचते हैं और स्वाद का अनुभव देने लगते हैं। इन्हीं आवेगों को पहचान कर हमारा मस्तिष्क हमें स्वाद का ज्ञान कराता है।

खाद्य पदार्थ का पूरी तरह स्वाद पाने में जीभ के अलावा अन्य ज्ञानेंद्रियां भी सहयोग देती है। गंध भी स्वाद का एक अंग है, जिसका अनुभव नाक से होता है। यही कारण है कि जुकाम हो जाने से भोजन का पूरा–पूरा स्वाद नहीं मिल पाता और वह फीका–फीका लगता है। एक प्रौढ़ व्यक्ति की जीभ पर लगभग 9000 स्वाद कलिकाएं होती है। आयु के बढ़ने के साथ–साथ स्वाद कलिकाएं शिथिल होने लगती है और वृद्धावस्था में ये निष्क्रिय होने लगती है। शरीर की अन्य कोशिकाओं की तरह स्वाद कलिकाएं भी बराबर नष्ट होती और बनती रहती है। हर दस दिन में लगभग आधी नई स्वाद कलिकाएं पुरानी कलिकाओं का स्थान ले लेती है।

(यह जानकारी विविध स्रोतों से प्राप्त है कृपया चिकित्सक से सलाह अवश्य लें।)

अनुभव अमृतम्

ये स्वयं को सुधारने का ध्यान जब पानरवा के दृश्यों का वर्णन कर रहा हूँ। पानरवा की घटनाओं में 34 साल पहले जा रहा हूँ तो अभी आज दिंनाक 1 अप्रेल 2020 को परमानंद के कक्ष कुर्सी पर बैठा हूँ उस समय कहाँ कुर्सियाँ थी– बेटा।

कुर्सियाँ खरीदने के लिए पैसा नहीं था। उस समय मुड्डी खरीदने का पैसा नहीं था, पर भगवान ने कैसे व्यवस्था कराई यह आश्चर्यजनक लगता है। पानरवा आ गया।

पानरवा आ गया। कपड़े उतारो। कमला जी बहुत उदास। अरे! कपड़े तो बहुत कम लाए हैं। अरे! कमला जी लाते कैसे ज्यादा? दो जीप से कहाँ से ज्यादा साधन थे। बस का रास्ता नहीं, हाँ, दोनों जीप किराए की है, हाँ पेट्रोल डलाने के लिए भी डीजल डलाने के लिए भी भगवान ना जाने अदभुत नरसी मेहता का मायरा भर देता था। नानी बाई की मायरा ने ठाकुर जी ने लाज और डॉ साहब पहले उतरे। डॉ साहब पधारो आपको लंबी यात्रा कराई।

कोई बात नहीं कैलाश जी। इस क्षेत्र में आना था। सुना था पानरवा सुना था आज पहुँच गए।

बड़ा बड़ा वे केई डॉक्टर,
सेवा भावी आवे रे।
तन मन धन सूं सेवा करने,
कतरा ही रोग मिटावे रे।।

आओ ओम जी भैया, जगदीश जी आर्य साहब भैया, वा भई वा ये कपड़े बच्चों के है। इस बोरी में देवियों के वस्त्र हैं। इस बोरी में, बासाब के वस्त्र है इस बोरी में। राम राम सा राम राम सा अदभुत केवल पढ़ा ही पढ़ा था जर्रर तन कैसा होता है? देख रहे हैं।

सेवा ईश्वरीय उपहार– 301 (कैलाश 'मानव')

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पैन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टैन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल 483, सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : ई, डी-71 बप्पा रावल नगर, हि.म. सेक्टर-6, उदयपुर
मुद्रक : न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. 8278607811, 9119398965 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353, • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023